न उफना दे आँसू हैं प्यारे
इन्हीं आँखों में उनकी चाह।'

यह गीत भी द्विअर्थक है। वास्तविकता है कि राकेश और सुहासिनी दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं। पर नन्द के सामने यह अभिनय सहित गान लाचारी के कारण होता है, इसीलिए द्विअर्थक हो गया है। प्रथम गीत से इसके शब्द कुछ सरल हैं फिर भी तत्सम शब्दावलि का मोह प्रसाद जी से नहीं छूटा है।

सुहासिनी की जो वेदना है उसी से संबंधित यह गीत है। इसीलिए राकेश गाता हुआ कहता है भीतर के आह को बाहर न निकलने दे। तुम्हें लोगों की हँसी का भीत लगेगा। फिर राकेश कहता है — जैसे शरद ऋतु में बादलों की माला के बीच बिजली कड़कती है उसी प्रकार तुम्हें तड़पना होगा। जहाँ मौन ही मौन है। वातावरण में प्रेम की फुहार है इसके कारण मीठी पीड़ा है, इसे सम्हाले चलना है। प्रलय तक भी व्याकुल नहीं होना है। अभिनय हो रहा है मकरन्द नंद के विलास कानन में, यह अभिनय ऊपरी तौर पर है भीतर तो टीस है। इसे यह गीत पूरी तरह व्यक्त करता है, पर सवाल है इसे सकल समझेंगे कितने? एक ही दृश्य में दो दो गीत साहित्यिक तो हैं पर नाटकीय नहीं। नंद के विलास कानन को ज्योतित करते हैं, कथानक के साथ संगति है पर नाटकीय कार्य-व्यापार की दृष्टि से जन सामान्य के लिए उपयुक्त नहीं है। ([illegible])

27.8.20